

'मुझे इस प्रसिद्ध कृषि विश्वविद्यालय के 41वें दीक्षांत समारोह में भाग लेते हुए अत्यंत प्रशन्नता हो रही है। कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा के क्षेत्र में योगदान के लिए इसकी काफी सराहना की जाती है। मैं उन सभी स्नातक छात्रों को बधाई देता हूं जो इस उत्कृष्ट संस्थान से विभिन्न डिग्री, पुरस्कार और डिस्टिंग्शन प्राप्त कर रहे हैं।

छात्रों को संरक्षण देने और उन्हें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ सशक्त बनाने और उनमें सही दृष्टिकोण और मूल्यों को विकसित करने के लिए सभी शिक्षकों और अभिभावकों को मेरी तरफ से बधाई!

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि इस संस्था के पूर्व छात्र प्रसिद्ध अनुसंधान संगठनों, नीति निर्माण निकायों और नागरिक सेवाओं में महत्वपूर्ण पदों पर कार्यरत हैं।

कृषि हमेशा से न केवल हमारी अर्थव्यवस्था का बल्कि हमारी संस्कृति एवं सभ्यता का भी अभिन्न अंग रही है। इसलिए, मेरे प्रिय मित्रों, आपने एक ऐसा पेशा चुना है जो न केवल महत्वपूर्ण है बल्कि पवित्र भी है। वास्तव में कृषि मेरे हृदय के बहुत करीब है और मैं उस क्षेत्र से आता हूं जो धान की खेती के लिए चर्चित है।

हमारी 50 प्रतिशत से अधिक आबादी अभी भी अपनी आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर है। यह क्षेत्र हमारी ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। इसलिए, लाखों लोगों के लिए भोजन एवं पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए कृषि को जलवायु के अनुकूल, लाभदायक और उत्पादक बनाना समय की मांग है।

मेरे प्रिय छात्रों,

फिलहाल एक वैश्विक महामारी से जूझ रहे हैं जिसने हर क्षेत्र में गतिविधियों को बाधित कर दिया है और भारत एवं दुनिया के बाकी हिस्सों को अभूतपूर्व तरीके से प्रभावित किया है। हालांकि भारतीय अर्थव्यवस्था में इस वर्ष गिरावट दिखने का अनुमान है लेकिन मुझे विश्वास है कि वह 2021 में प्रभावशाली विकास दर के

साथ वापसी करेगी और सबसे तेजी से उभरती अर्थव्यवस्था के तौर पर अपनी स्थिति को बहाल करेगी।

मौजूदा वैश्विक महामारी के दौरान अन्य सभी क्षेत्रों में गिरावट दर्ज की गई है लेकिन कृषि एकमात्र ऐसा क्षेत्र है जिसने अच्छा प्रदर्शन करते हुए अर्थव्यवस्था को काफी सहारा दिया है। वास्तव में, खरीफ फसलों के रकबा पर कोविड-19 का कोई प्रभाव नहीं दिखा। खेती का रकबा बढ़ा है और पिछले साल के मुकाबले इसमें लगभग 59 लाख हेक्टेयर की वृद्धि हुई है। भारत सरकार द्वारा बीज, कीटनाशक, उर्वरक, मशीनरी और ऋण जैसे इनपुट को समय पर उपलब्ध कराए जाने से लॉकडाउन के बावजूद व्यापक रकबा संभव हो सका है।

खाद्यान्न उत्पादन वर्ष 2019-20 खरीफ सत्र के दौरान 143.38 मिलियन टन रहा था जबकि वर्ष 2020-21 में कोविड-19 संकट के बावजूद इसे बढ़कर 144.52 मिलियन टन के रिकॉर्ड स्तर पर पहुंचने का अनुमान है। सबसे कठिन समय में भी अदम्य साहस और निष्ठा दिखाने के लिए मैं किसानों को नमन करता हूं।

प्रिय बहनों और भाइयों,

कृषि क्षेत्र की वृद्धि को अब बढ़ती जनसंख्या, सिकुड़ती कृषि योग्य भूमि, भूमि क्षरण, शहरीकरण का विस्तार, उपभोग पैटर्न में बदलाव, जलवायु परिवर्तन, वर्षा पर अत्यधिक निर्भरता, बाजारों से कमजोर लिंकेज और अत्यधिक बर्बादी के साथ अपर्याप्त आपूर्ति श्रृंखला जैसे कई परिवर्तनकारी बदलावों के संदर्भ में देखा जाना चाहिए।

यह चिंता का विषय है कि भूजल स्तर नीचे जा रहा है और सिंचाई के स्रोत तेजी से प्रदूषित हो रहे हैं। ऐसे में कृषि उपज में वृद्धि करना एक बड़ी चुनौती बन गई है, खासकर तमिलनाडु जैसे जल संकट वाले राज्य में। इसके लिए सूखे की मार सहने लायक जीनोटाइप और जल संरक्षण के लिए प्रौद्योगिकी विकसित करने का प्रयास करना आवश्यक है।

मैं समझता हूँ कि तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय ने जैविक और अजैविक दबाव प्रतिरोध के लिए पारंपरिक एवं जैव-प्रौद्योगिक संबंधी साधनों का उपयोग करते हुए इंजीनियर्ड जीनोटाइप विकसित करने के क्षेत्र में अपनी एक पहचान बनाई है। मैं चाहूंगा कि आप इस क्षेत्र में शोध को आगे बढ़ाएं। पहले से ही मौजूद प्रतिरोधी क्षमता वाली फसल की किस्म जलवायु संबंधी कई समस्याओं को हल कर सकती है।

इस संदर्भ में तमिलनाडु की सराहना करना उचित होगा क्योंकि जल शक्ति मंत्रालय की ओर से वर्ष 2019 का जल प्रबंधन के लिए बेहतरीन राज्य का पुरस्कार तमिलनाडु को दिया गया था। मैंने 11 नवंबर 2020 को यह पुरस्कार इस राज्य को प्रदान किया था। कृषि एवं संबद्ध गतिविधियों में तमिलनाडु का प्रदर्शन वर्षों से न केवल उत्पादन के मामले में बल्कि अधिक उपज देने वाली नई किस्मों एवं प्रौद्योगिकी को अपनाने के मामले में भी अनुकरणीय रहा है।

प्रिय छात्रों,

अगले कुछ दशकों में जलवायु परिवर्तन का सीधा असर कृषि एवं खाद्य व्यवस्था पर पड़ेगा। इस स्थिति से निपटने के लिए जलवायु के अनुकूल फसलों/ किस्मों का विकास करने की आवश्यकता है जो सूखे, बाढ़, जलमग्नता, गर्मी, ठंड, लवणता, कीट और बीमारियों जैसी समस्याओं के व्यापक दायरे का सामाना कर सकती हैं।

इस लिहाज से भारतीय कृषि में लचीलापन को बढ़ाने के लिए किए जाने वाले किसी भी प्रयास का उद्देश्य जलवायु में बदलाव के अनुकूल किस्मों एवं अन्य प्रबंधन प्रथाओं के विकास पर होना चाहिए। ऐसी प्रौद्योगिकी विकसित करने की आवश्यकता है जो छोटे एवं सीमांत किसानों के जोखिम को कम करने में मदद करे ताकि कृषि का सतत विकास सुनिश्चित हो सके।

सामान्य तौर पर जीनोम में बदलाव और विशेष तौर पर सीआरआईएसपीआर-सीएस9 ऐसे क्रांतिकारी उपाय हैं जो आने वाले दिनों में विज्ञान, खाद्य उत्पादन और समाज को प्रभावित कर सकते हैं। इस तकनीक में पौधों को जैविक एवं

अजैविक दबावों को झेलने में समर्थ बनाने और उनके पोषण मूल्य एवं उपज में सुधार लाने के साथ ही कृषि में बदलाव करने की काफी संभावनाएं मौजूद हैं।

मुझे यह जानकर खुशी है कि इस विश्वविद्यालय ने फसल में सुधार के लिए इस तकनीक का उपयोग पहले ही शुरू कर दिया है। उदाहरण के लिए, चावल में बीटा-कैरोटीन एवं सुगंध को बढ़ाने, लवणता के प्रति प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने आदि के लिए इसका उपयोग किया जाता है।

कृषि के आधुनिकीकरण एवं व्यवसायीकरण के लिए उसका मशीनीकरण करना काफी महत्वपूर्ण है। इन उपायों के जरिये उत्पादकता को 30 प्रतिशत तक बढ़ाया जा सकता है और खेती की लागत को 20 प्रतिशत तक कम किया जा सकता है। इसलिए आवश्यकता- आधारित मशीनरी के विकास पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि तमिलनाडु मशीन के जरिये धान की रोपाई करने में सहायता प्रदान कर रहा है और वह कस्टम हायरिंग सेंटरों को बड़े पैमाने पर बढ़ावा दे रहा है। ऐसे में मेरा सुझाव है कि खेतों में विभिन्न जरूरतों जैसे- रोशनी, बाड़ लगाने, उपज को सुखाने आदि कार्यों में सौर ऊर्जा का उपयोग करना समय की मांग है।

नैनोटेक्नोलॉजी एक उभरता हुआ नया क्षेत्र है। कृषि क्षेत्र की कुछ समस्याओं से निपटने में इसका लाभ उठाया जा सकता है। मैं वर्ष 2010 के आरंभ में कृषि अनुसंधान के लिए समर्पित एक नैनोटेक्नोलॉजी केंद्र की स्थापना करते हुए इस क्षेत्र में अग्रणी होने के लिए टीएएनयू की सराहना करता हूं।

मुझे बताया गया है कि इस केंद्र ने नमी, पोषक तत्वों की कमी, कीटनाशक अवशेषों और नैनो-कृषि इनपुट की ऑनसाइट पहचान के लिए नैनो-डायग्नॉस्टिक्स विकसित किया है।

प्रिय बहनों और भाइयों,

भारत सरकार ने कृषि को पुनर्जीवित करने के लिए हाल के वर्षों में कई कदम उठाए हैं। इससे एक उल्लेखनीय बदलाव आया है और किसानों की आय को

दोगुना करने पर ध्यान केंद्रित किया गया है। हाल में लागू की गई प्रधानमंत्री किसान निधि (पीएम-किसान) योजना एक वरदान है और इससे भारत के 72 प्रतिशत से अधिक किसानों को लाभ होगा। विभिन्न योजनाओं द्वारा प्रदान की जाने वाली सब्सिडी के साथ-साथ इस आय समर्थन से किसानों के आर्थिक लाभ पर गुणात्मक प्रभाव दिख सकता है।

किसानों की आय बढ़ाने के लिए हमें उत्पादकता में सुधार करने, संसाधनों का कुशलता से उपयोग करने, फसल की तीव्रता बढ़ाने और अधिक मूल्य वाली फसलों में विविधता लाने का प्रयास करना चाहिए। यह सुनिश्चित करने के लिए हरसंभव प्रयास किया जाना चाहिए कि किसानों को बेहतर संग्रहण एवं प्रसंस्करण और कृषि इनपुट, वित्तपोषण एवं आउटपुट की बिक्री के लिए कुशल बाजार तंत्र के माध्यम से लाभकारी मूल्य प्राप्त हो सके। साथ ही, पर्यावरण की रक्षा करना और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित एवं हरेभरे ग्रह को बरकरार रखना हमारा पावन कर्तव्य है।

मैं आप में से हरेक से आग्रह करना चाहूंगा कि इस प्रतिष्ठित कृषि विश्वविद्यालय के स्नातकों के तौर पर आप प्रौद्योगिकी आधारित कृषि के सतत विकास का नेतृत्व करें जिससे किसानों को बेहतर आय मिल सके और हमारे देश के लाखों लोगों के लिए खाद्य एवं पोषण सुरक्षा सुनिश्चित हो सके। आपका शोध समाज के लिए प्रासंगिक होना चाहिए और मानव जाति के सामने आने वाली जलवायु परिवर्तन से लेकर स्वास्थ्य संबंधी विभिन्न समस्याओं के समाधान की खोज करने पर ध्यान केंद्रित होना चाहिए।

आइए, हम कोविड-19 के प्रभावों से अपने साहस और कल के लिए विचारों को प्रभावित न होने दें। आप एक ऐसी दुनिया में कदम रख रहे हैं जो कहीं अधिक चुनौतीपूर्ण है और ऐसे में हमें बदलाव करने, साहसपूर्वक चुनौतियों का सामना करने और अवसरों को भुनाने के लिए खुद को तैयार रखना होगा। आपको नवाचार, रचनात्मकता और दयालुता के साथ एक बेहतर दुनिया बनाने की जिम्मेदारियों को निभाना होगा।

तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय ने अपने 100 से अधिक वर्षों के दौरान काफी ख्याति अर्जित की है। मुझे विश्वास है कि विश्वविद्यालय उत्कृष्टता के लिए अपनी खोज को जारी रखेगा और आने वाले वर्षों में कई मुकाम हासिल करेगा। आप सभी को मेरी शुभकामनाएं!

दोस्तों, अंत में मैं केवल इतना कहना चाहूंगा कि देश के युवा वर्ग समृद्धि के बारे में सोचें और सुनिश्चित करें कि हमारी आने वाली पीढ़ियों को एक सुंदर, हराभरा और एक जीवंत ग्रह मिले।

जय हिन्द!